माँ की आँचल

'माँ क्या आप आज आओगी? फिर लेट, तब तक तो मैं सो जाऊँगा।' केशव माँ पर गुस्सा होकर फोन काट लेता है। यह तो अब रोज का मामला बन गया है। 'माँ से मेरी कट्टी है आज' - केशव लाला से कहता है। लाला उसके बातो पर ध्यान न देते हुए अपनी काम कर रही है। लाला तीन साल से वहाँ काम करती आ रही है। उसे तो केशव से यह कट्टी की कहानी रोज़ सुनाई पड़ती है, वह कभी भी इसके बारे मे केशव से बात नही करती। 'ठीक है बाबा, ठीक. अगर आज का नाटक खतम हुआ तो हम नाश्ता खाएंगे। तुम्हारी मनपसंद नूडिल्स बनाया है। वाह! लाला सिर्फ तुम ही मुझसे प्यार करती है। काश तुम मेरी माँ होती। केशव की बात सुनकर लाला भावुक हुआ। उसने

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

केशव को कस्के गले लगा ली। और उसका गुदगुदी करने लगा। केशव हसी से फूटने लगी। इतनी बात से वह अपनी माँ के बारे भूलकर लाला के साथ नाश्ता करने बैठा। रात को सिर्फ वह दोनो ही उस बड़े बंगले मे था। बाहर अचानक से बारीश होने लगी। बिजली चमकी साथ साथ बादल की गरज - इस घोर अंधानक वर्षा ने केशव को अपनी नींद से जगाया। लाला... लाला... तुम कहाँ हो? मुझे डर लग रहा है। माँ, आप कब वापस लौटोगी? माँ को पुकारकर वह रोने लगा। आज कुल मिलकर पाँच दिन हुए है केशव अपनी माँ को देखे। अपनी माँ की कहानी सुने, अपनी माँ की गले लगाए, अपनी माँ की खुशबू को अनुभव करके, अपनी माँ को चुंबन दिए.....। रोने की थकान से केशव सो गया। अपने बगैर उसको स्वांतना देने के लिए कोई

नही, इसी के साथ एक और चौबीस घंटा गुज़रा। हलो, गुड मॉर्निंग केशव उठो। क्या आज स्कूल नही जाना? उठो, मुख धोकर नीचे आ जाओ, नाश्ता तैयार है। रे बाबा उठो...। हाँ...। केशव जैसे ही होश मे आया वह बिना कुछ सोचे अपनी माँ की कमरे की ओर भागा। इस निष्कलंक जीवन के अंदर सिर्फ माँ, माँ, माँ ही भरा था। उसकी कदमो की रफ्तार बढने लगी, उसके एक एक कदम दृढ़ एवं सूक्ष्म थी। इसकी आनंद की सीमा न रही। वह कमरे के ~~पास~~ पास आके रुका, एक दीर्घनिश्वासन लेके 'माँ' पुकारकर वह दरवाज़ा खोला। वह कमरा अब छह दिन के बाद खुला है। माँ की यूनिफोम, ढेर सारी मास्क, ~~और~~ मेडिकल उपकर्ण सभी अपने अपने स्थान मे है, रोज़ की तरह उस कमरा बिलकुल साफ, जिस तरह उसकी माँ चाहती है। केशव ने पूरा कमरा, एक-एक कोने मे जाकर देखा, माँ की नाम और निशान नही मिला।

"केशव, तुम जरुर लेट होगे। नहा धोकर नीचे आजाओ, नाश्ता ठंडा हो रहा है।" लाला माँ कहाँ है? केशव नीचे दौड़कर आते पूछा। "माँ की कमरे मे वह नही है।" केशव अब तक तुमने मुँख भी नही धोया? चलो आओ मे ही तुम्हे नहलाती हूँ।" नही माँ नहलाएँगी, क्या माँ? अरे दीदी अब तक नही लौटी। तुम क्या करोगे। केशव अब बेहस करने का वक्त नही है, जल्दी जल्दी जाओ।" माँ ने फिर मुझसे छूट बोली। मैं माँ से बिलकुल प्यारा नही करता। केशव रोने लगा - लाला की बात सुनो माँ अभी बहुत संघर्ष कर रही है। वह अस्पताल मे अपनी कर्तव्य कर निष्ठा रही है। तुम्हें उनको समझना होगा। तुम्हारी माँ की भी मन करती है तुम्हारी साथ वक्त बिताने की, तुम्हें पार्क मे ले जाने की लेकिन इस कोरोना महामारी अब फिर शुरु हुआ है। हमारी जनता को तुम्हारी माँ जैसी लोगो की सख्त

ज़रुरत है। इसलिए तुम्हारी माँ दिन रात वहाँ बीमारी को फैलने से रोकने की कठिन परिश्रम कर रही है। ज़रुर कुछ दिन बाद, माँ घर ज़रुर लौट सकती है। ठीक है केशव! हाँ, लेकिन मैं की ज़रुरत मुझे भी है न, मैं उन्हें देखना चाहती हूँ हूँ। हाँ माँ ज़रुर आवोगे। मुझे कितने दिन और माँ के लिए इंतज़ार करना होगा। वह तो मुझे पता नही, लेकिन लाला तुम्हारे साथ है न। अब चलो तैयार हो जाओ। केशव ढीले ढीले कदमों से अपनी कमरे की ओर जाती है। फोन बजती ही..... लाला दौड़के फोन लेती है। रामश्री हाउस, यह कौन बोल रहा है। लाला, मै दीदी हूँ, दीदी.... आप कैसी हो, कल तो फोन करने की समय ही नही मिला। आपने नाश्ता की? वही, अब और देरी होगी। यह बीमार के अँग प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

Item Code: 952 Participant Code: 110

छोटे - छोटे बच्चे भी हो, जिन्हे बहुत बुखार हुआ है। दीदी अपना ख्याल रखिएगा। लाला एक काम करो, आज केशव को स्कूल मत भिजवाओ, कल शनिवार है न, फिर होलीडे है। तीन दिन घर पर रहते है। पता नही अगर उसे कही से बुखार हुआ तो क्या होगा। ओर तुम भी बाहर जाकर लौटते वक्त हाथ सानिटैसर जरूर करना। जी! ~~ ~~। और एक और बात आज मै हो सके तो आऊगी। केशव को मत बताना। सच मे, केशव भी आपको बहुत देखना चाहती है। जानती हूँ मै भी उसे देखने मे बैचेन हूँ। लाला मै रखती हूँ, एक एमरजन्सी आया है। ठीक है दीदी रखती हूँ। लाला ने फोन बंद कर दिया। हे भगवान दीदी की रक्षा करे। लाला, लाला...। केशव तैयार होके नीचे आया। बाबू, ~~अ~~ तुम न आज स्कूल मत जाओ। क्यो, क्या हुआ? क्या माँ ने

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

फोन की थी? क्या ...न वह तो - लाला बकबकाने लगी। केशव को समझ में आया। क्या माँ आएँगी? क्या वह आज घर लौटेगी? बताओ ना.....। ठीक है बाबा...। लेकिन दीदी को मत बताना। वह आज आएगी। वाह! केशव खुशी से कूदने लगी, वह कूद-कूदकर सोफा में चढा। केशव नीचे उतरो, तुम गिरोगे। नहीं लाला, मुझे कुछ नहीं होगे। हाँ, मुझे एक आइडिया है, माँ को एक ~~सर~~ सरप्रैस देते है। क्या सरप्रैस? लाला आज बहुत दिन हुए है, माँ ने ठीक से खाना भी नहीं खाया होगा। इसलिए हम आज रात के लिए एक बडी फीस्ट, अच्छी अच्छी भोजन बनाकर माँ को देंगे। ~~अप~~ उनकी मन पसंद सभी चीजे हम बनाएंगे और माँ की स्ट्रोबरी ज्यूस भी। यह एक बेहतर आइडिया है। मैं आपकी मदद करु? लाला मैं भी कुछ मदद करना चाहती हूँ। ठीक है, लेकिन कोई शरारत

नही करने का। जी। यह कहकर केशव फूट - फूटकर हसने लगी। लाला की आँखो से आसू बहने लगी। वह बहुत दिनो के बाद केशव को इतनी खुशी मे देखा है। वह दोनो रसोई की ओर निकली। काम शुरु हुआ। पहला, वह लोग आलू पराठा बनाने की सोचा, आटा निकाली, केशव को से पानी लाने के लिए कहा। दोनो एक साथ आटा गूँधने लगी...। समय बीतने की बारे मे दोनो को कोई ज्ञान नही था। वह अपनी कामो मे मुग्ध था। दो -पहर से शुरु हुई काम, शाम तक पूरा हुआ। दोनो, थक गई थी। लाला, अपने लिए चाय और केशव के लिए दूध लेकर आँगन की ओर चली। वहाँ केशव सूरज की ढलने और पूरे वातावरण की रहस्यमय सुंदरता को अपने और समा रहा था, वह उस वातावरण को अंत तक देखना चाहा। केशव, उन

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 110

चुप क्यों हो ?' लाला आज सूरज और गगन कितना सुंदर प्रतीत हो रही है, पूरा संसार मेरी माँ का स्वागत करने के लिए तैयार, देखो मैं चाँद को भी देख सकती हूँ। नाक खाया हुआ बिस्कुत की तरह।'

लो, दूध पीयो, तुम भूखे होगे। हाँ, लेकिन लाला मैं जरूर आज माँ के साथ ही खाना खाऊँगा। हाँ, वह तो पक्की है। लेकिन तब तक तुम अपनी गृहकार्य करो। जाओ, यहाँ मच्छर अब बहुत है। पता नहीं कब बीमार पडोगे। जी मेमसाहब, ... केशव यह कहकर हँसता हुआ अपने कमरे की ओर दौडा।

'अभी समय आठ बज चुकी है।' - लाला परेशान होने लगी। दीदी अब तक क्यों नहीं आई? इसी क्षण दरवाज़े की घर घंटी बजता है। लाला के वहाँ आते ही केशव दौडकर वहाँ पहुँचता है। 'मैं देखूँगी माँ को पहले। सिर्फ मैं। ठीक है, दरवाज़ा तो खोलने दो ज़रा। लाला ने दरवाज़ा खोला, केशव

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 110

दौडते हुए बाहर कूदा। लेकिन वह अपनी माँ को नही देखा। उस दृश्य को देखकर लाला चकित रह गई। एक आम्बुलन्स घर के सामने था, उसके अंदर से एक शरीर बाहर निकाला जा रहा है। इस वाहन को देखकर, पडोसी और अन्य लोग के झुंड घर के सामने। लाला चिल्लाते, रोते वही बेहोश हुई। केशव कुछ नही समझा, वह वहाँ नही नही हिला, माँ की सुगन्ध उसे आ रहा था। पूरा वातावरण निश्चल है। वह अब पक्षी की चीख, या मेंडक की टर टर नही सुन पारहा है। आसमान मे तारो के कोई निशान नही। चंदा मामा काले बादलों के पीछे छिपकर रहता नजर आता है। चार आदमी एक स्ट्रेच्चर मे सफ़ेद पोशाक से ढके शरीर को खीचते उसके सामने आकर रुके। किसी को भी

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

पोशाक को उतारकर मुख दिखाने की हिम्मत नहीं थी। केशव ने भी ~~कि~~ नहीं किया। वह ऐसा सीन सिनेमा, मे देखा है जहाँ ~~खायल~~ हीरो, अपनी प्रेमिका की शरीर ऐसी ही लाते वाहन ~~मे~~ से उस ~~क~~ ~~सफेद~~ कपडे को उतारकर, रोता है। अपनी प्रेमी की उस ~~अक~~ अचलित शरीर को देखकर पागर की तरह पेश्आता है। चेहरे पर ~~थ~~ चुंबन करता है। केशव की दिमाग से वह सभी ~~रंग~~ दौड रहा है। लेकिन वह कुछ भी नहीं करता। वह उस खामोशी को तोडकर कहता है 'अब कितनी और इंतज़ार करना होगा? अब कितनी और.... माँ नहीं आया, मेरी गले नहीं लगे, मेरी आसू नहीं पोछे, मेरी ओर देखकर - नहीं तुम मेरी इस दुनिया के सबसे प्यारे हो वह नहीं कहा। इतना कहकर केशव अपने मन मे पैदा हुए

हर तरह की ~~भावों बाहर की~~ भाव को स्वतंत्रित किया। लेकिन केशव सिर्फ रो सका। जिस भावों को ~~उसे शब्द~~ वह शब्दों में न बोल सका, उन सभी को वह सेक्स उसकी आसू से बताया। वहाँ उपस्थित लोग यह सब सुनकर और देखकर हृदय स्तंभ हुआ। कुछ लोग वहाँ में से चले गए, कुछ लोग अपनी आसू पोछ रहे...। लेकिन केशव का पूरा ध्यान उस निश्चल सफेद पोशाक पर था।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)